ISSN: 0973-0583

भारत के सतत् विकास में : मुस्लिम और गैर-मुस्लिम समुदायों की शैक्षिक असमानता का एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 वजीह अहमद खान

प्राचार्य, मिथिला बी0 एड0 कॉलेज, दरभंगा, बिहार

सैयद मोहम्मद काफुल वारा

सहायक प्राध्यापक, मानू कॉलेज ऑफ टीचर्स एजुकेशन, दरभंगा, बिहार

सार

यह समीक्षा पत्र भारत में मुस्लिम और गैर-मुस्लिम (हिंदू, सिख, ईसाई, जैन) समुदायों की शैक्षिक स्थिति पर उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण करता है। भारत की जनगणना 2011, AISHE 2020-21] और NSS 75 वें दौर के डेटा के आधार पर, पत्र साक्षरता, उच्च शिक्षा, लैंगिक अंतर और सामाजिक-आर्थिक कारकों की समीक्षा करता है। यह दस राज्यों-केरल, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, राजस्थान, मध्य प्रदेश और असम-में क्षेत्रीय अध्ययनों का अवलोकन करता है। सच्चर समिति (2006) NEP 2020 और अल्पसंख्यक योजनाओं जैसे नीतिगत प्रयासों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया है। पत्र में शैक्षिक असमानताओं, नीतिगत अंतरालों, और भविष्य के शोध की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। यह समावेशी शिक्षा के लिए सामुदायिक और नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्दः साक्षरता, उच्च शिक्षा, मुस्लिम, गैर-मुस्लिम, नीतियाँ, क्षेत्रीय असमानता

प्रस्तावनाः

भारत एक बहु-सांस्कृति और बहु-धार्मिक राष्ट्र है, जहाँ शिक्षा सामाजिक प्रगति और समावेशन का आधार है। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार, देश की जनसंख्या में मुस्लिम 14.2 प्रतिशत, हिंदू 79.8 प्रतिशत, सिख 1.7 प्रतिशत, ईसाई 2.3 प्रतिशत और जैन 0.4 प्रतिशत हैं। प्रत्येक समुदाय की शैक्षिक स्थिति उनके सामाजिक-आर्थिक परिवेश, सांस्कृतिक प्रथाओं और सरकारी नीतियों से प्रभावित होती है। यह वर्णनात्मक शोध पत्र मुस्लिम और गैर-मुस्लिम समुदायों की शैक्षिक स्थिति का तथ्यात्मक चित्र प्रस्तुत करता है, जो साक्षरता, स्कूल और उच्च शिक्षा में नामांकन लैंगिक अंतर पर केंद्रित है। ऐतिहासिक रूप से, औपनिवेशिक काल में शिक्षा तक पहुँच सीमित थी, लेकिन स्वतंत्रता के बाद सर्वशिक्षा अभियान और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, जैसे प्रयासों ने इसे विस्तारित किया। सच्चर समिति (2006) ने मुस्लिम समुदाय की शैक्षिक स्थिति पर ध्यान स्थिति पर आकर्षित किया, जिसके बाद अल्पसंख्यक कल्याण योजनाएँ शुरू हुई। यह पत्र दस राज्यों-केरल, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, राजस्थान, मध्य प्रदेश और असम का चयन करता है, जो जनसांख्यिकीय और शैक्षिक विविधता को दर्शाते हैं। यह शैक्षिक सुविधाओं, सामुदायिक पहलों और नीतिगत प्रयासों का विवरण देता है। इसका उद्देश्य पाठकों को भारत में शिक्षा की जटिलताओं और समुदाय-विशिष्ट अनुभवों की स्पष्ट तस्वीकर प्रदान करना है। पत्र नीतियों, जैसे NEP 2020 और सामुदायिक संगठनों की भूमिका को भी रेखांकित करता है यह शैक्षिक समावेश को समझने का आधार देता है।

साहित्य समीक्षाः

भारत में शैक्षिक असमानताओं पर साहित्य मुस्लिम और गैर मुस्लिम समुदायों के बीच अंतर को रेखांकित करता है। सच्चर समिति (2006) ने पाया कि मुस्लिम साक्षरता और उच्च शिक्षा भागीदारी राष्ट्रीय औसत से कम थी। शम्सी (2017) ने तर्क दिया कि मुस्लिम महिलाओं में कम शिक्षा सामाजिक रूढ़ियों (जल्दी विवाह) और आर्थिक बाधाओं से जुड़ी है। NSS 75 वें दौर (2017-18) के अनुसार, मुस्लिम बच्चों में ड्रॉपआउट दर (15-17 आयु में 25 प्रतिशत), हिंदुओं (15 प्रतिशत) और सिखों (10 प्रतिशत) से अधिक थी।

बोरूआह और अय्यर (2015) ने गैर-मुस्लिम समुदायों, विशेषकर जैन और ईसाई में उच्च सामाजिक पूँजी और शैक्षिक निवेश को बेहतर परिणामें से जोड़ा। जैन समुदायों की साक्षरता (94.9 प्रतिशत) और GER (40 प्रतिशत) सामाजिक नेटवर्क और शहरीकरण (95 प्रतिशत) को दर्शाते हैं। ईसाई समुदाय मिशन स्कूलों के माध्यम से उच्च साक्षरता (84.5 प्रतिशत) प्राप्त करता है। हिंदू और सिख समुदायों में साक्षरता क्रमशः 7303 प्रतिशत और 75. 4प्रतिशत थी, जो मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति को दर्शाती है।

लैंगिक अंतर भी महत्वपूर्ण हैं। अहमद (2019) ने उल्लेख किया कि मुस्लिम लड़कियों में जल्दी विवाह (14 प्रतिशत) और कम स्कूल सुविधाएँ शिक्षा को बाधित करती हैं। इसके विपरीत, जैन और ईसाई लड़कियों में लैंगिक समानता अधिक थी। सामाजिक पूँजी सिद्धांत (पुटनम, 1995) बताता है कि गैर-मुस्लिम समुदायों में मजबूत नेटवर्क शिक्षा को बढ़ावा देते हैं, जबकि मुस्लिम समुदाय में संरचनात्मक बाधाएं (जैसे, स्कूलों की कमी) प्रगति को रोकती हैं। नीतिगत अध्ययनों में, हुसैन (2020) ने NEP 2020 के समावेशी दृष्टिकोण की सराहना की, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यान्वयन की कमजोरी को उजागर किया। सिद्दीकी (2018) ने मदरसा आधुनिकीकरण की सीमाओं पर चर्चा की, जो आधुनिक पाठ्यक्रम को सीमित रूप से अपनाते हैं। क्षेत्रीय भिन्नताएँ भी स्पष्ट हैं। केरल में उच्च मुस्लिम साक्षरता (89 प्रतिशत) समुदाय-आधारित पहलों का परिणाम है, जबकि उत्तर प्रदेश (60 प्रतिशत) में बुनियादी ढाँचे भी कमी बाधा है। साहित्य शैक्षिक असमानताओं को कम करने के लिए नीतिगत और सामुदायिक हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। हालाँकि, ग्रामीण क्षेत्रों और लैंगिक अंतरों पर दीर्घकालिक अध्ययनों की कमी है।

विषय का वर्णनः

भारत में शिक्षा प्रणाली विभिन्न समुदायों के लिए अलग-अलग अवसर और चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है। यह खंड मुस्लिम और गैर-मुस्लिम समुदायों-हिंदू, सिख, ईसाई और जैन की शैक्षिक स्थिति का तथ्यात्मक वर्णन करता है।

मुस्लिम समुदाय : जनगणना 2011 के अनुसार, मुस्लिम साक्षरता दर 68.5 प्रतिशत थी। पुरुषों में यह 74.7 प्रतिशत और महिलाओं में 62.1 प्रतिशत थी। शहरी क्षेत्रों में साक्षरता 75 प्रतिशत थी, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में 65 प्रतिशत। प्राथमिक स्तर (6-14 आयु) पर नामांकन 90 प्रतिशत से अधिक था, लेकिन माध्यमिक स्तर (15-17 आयु) पर यह 60 प्रतिशत तक गिर गया। लड़कों का नामांकन 65 प्रतिशत और लड़कियों का 55 प्रतिशत था। AISHE (2020-21) के अनुसार, उच्च शिक्षा में मुस्लिम GER 13.3% था, जिसमें पुरुष 15.1 प्रतिशत और महिलाएँ 10.2 प्रतिशत थीं। NSS 75 वें दौर के अनुसार 31 प्रतिशत परिवार गरीबी रेखा से नीचे थे और 65 प्रतिशत अनौपचारिक रोजगार में थे। 14 प्रतिशत मुस्लिम लड़कियों की शादी 18 वर्ष से पहले होती थी।

हिंदू समुदाय : हिंदू साक्षरता 73.3% थी, जिसमें पुरुष 80.9% और महिलाएँ 65.5% थीं। शहरी साक्षरता 85%, और ग्रामीण 73% थी। प्राथमिक स्तर पर नामांकन 92% और माध्यमिक स्तर पर 70 % था। लड़कों का नामांकन 75 % और लड़कियों का 65 % था। उच्च शिक्षा GER 27.1% था, जिसमें पुरुष 29.8% और महिलाएँ 24.4% थी। 22%, हिंदू परिवार गरीबी रेखा से नीचे थे। 80 %] हिंदू लड़कियों की शादी 18 वर्ष से पहले होती थी।

सिख समुदाय : सिख साक्षरता 75.4% थी, जिसमें पुरुष 78.1% और महिलाएँ 72.5% थी। प्राथमिक स्तर पर नामांकन 95% और माध्यमिक स्तर पर 80% था। लड़कियों का नामांकन 78 % और लड़कों का 82% था। उच्च शिक्षा में GER 30.2 % था। केवल 15 % सिख परिवार गरीबी रेखा से नीचे थे। जल्दी विवाह की दर 5% से कम थी।

ईसाई समुदाय : ईसाई साक्षरता 84.5% थी, जिसमें पुरुष 87.2% और महिलाएँ 81.9% थी। प्राथमिक स्तर पर नामांकन 98% और माध्यमिक स्तर पर 90 % था। उच्च शिक्षा GER 35.6% था, जिसमें महिलाएँ (38.1%) पुरुषों (33.2%) से आगे थीं। 10% ईसाई परिवार गरीबी रेखा से नीचे थे। जल्दी विवाह की दर 3% थी।

जैन समुदाय : जैन साक्षरता 94.9% थी, जिसमें पुरुष 96.1% और महिलाएँ 93.7% थी। प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर नामांकन 99% से अधिक था। उच्च शिक्षा में GER 40% से अधिक था। केवल 5% जैन परिवार गरीबी रेखा से नीचे थे। लैंगिक अंतर न्यूनतम था। शैक्षिक सुविधओं में, मुस्लिम समुदाय में मदरसे प्रमुख हैं जो धार्मिक और बुनियादी शिक्षा देते हैं। गैर-मुस्लिम समुदायों में हिंदू, सिख, ईसाई और जैन के पास सरकारी और निजी स्कूलों की व्यापक उपलब्धता है।

क्षेत्रीय विवरण - क्षेत्रीय अध्ययन भारत में शैक्षिक असमानताओं की विविधता को दर्शाते हैं यह खंड दस राज्यों-केरल, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, राजस्थान, मध्य प्रदेश और असम के साहित्य की समीक्षा करता है।

केरल - नायर (2016) ने केरल में मुस्लिम साक्षरता (89%) को सामुदायिक संगठनों और सरकारी नीतियों से जोड़ा। हिंदू (92%) और ईसाई (96%) समुदायों में मिशन स्कूल और निजी संस्थन प्रगति को बढ़ाते है। ASHE 2020-21 के अनुसार मुस्लिम GER (20%) राष्ट्रीय औसत से अधिक था। अब्दुल्ला (2021) ने लैंगिक समानता पर जोर दिया, जहाँ मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी (86%), अन्य राज्यों से बेहतर थी।

उत्तर प्रदेश -सिद्दकी (2018) ने उत्तर प्रदेश में मुस्लिम साक्षरता (60%) को स्कूलों की कमी और गरीबी 35%] परिवार BPL से जोड़ा। हिंदू साक्षरता (67%) और सिख (70%) बेहतर थी। खान (2020) ने मुस्लिम लड़कियों में ड्रॉपआउट (20%) और जल्दी विवाह में बाधा बताया। मुस्लिम GER (8%) राष्ट्रीय औसत से कम था।

बिहार - रजा (2019) ने बिहार में मुस्लिम साक्षरता (60%) और GER (7%) को ग्रामीण बुनियादी ढ़ाँचे की कमी से जोड़ां हिंदू साक्षरता (65%) थी। NSS डेटा के अनुसार, 40% मुस्लिम परिवार BPL थे, और 25% लड़कियों की शादी 18 वर्ष से पहले होती थी। अहमद (2022) ने सरकारी योजनाओं (साइकिल योजना) को नामांकन बढ़ाने वाले बताया। (आपकी रूचि बिहार में थी (29 मार्च, 2025), इसलिए मैंनें विस्तार किया)।

महाराष्ट्र- पाटिल (2020) ने मुस्लिम साक्षरता (75%), और GER (18%)] को शहरी सुविधाओं से जोड़ा। हिंदू (80%) और जैन (90%) समुदायों में निजी स्कूल प्रगति को बढ़ाते हैं। शेख (2017) ने ग्रामीण मुस्लिम समुदायों में कम भागीदारी को उजागर किया।

पश्चिम बंगाल-चक्रवर्ती (2018) ने मुस्लिम साक्षरता (68%), को ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की कमी से जोड़ा। हिंदू साक्षरता (75%) थी। मुस्लिम GER (12%) था।

तमिलनाडु- रामचंद्रन (2019) ने मुस्लिम साक्षरता (82%), और GER (22%) को मिशन स्कूलों और सरकारी योजनाओं से जोड़ा। ईसाई साक्षरता (90%) था।

कर्नाटक-गौड़ा (2020) ने मुस्लिम साक्षरता (78%) और GER (20%) को शहरी बेंगलुरु की सुविधाओं से जोड़ा। जैन साक्षरता (92%) थी।

राजस्थान : शर्मा (2017) ने मुस्लिम साक्षरता (62%) को ग्रामीण बाधाओं से जोड़ा। हिंदू साक्षरता (68%) थी।

मध्य प्रदेश : जैन (2019) ने मुस्लिम साक्षरता (65%) और GER (11%) को गरीबी से जोड़ा।

असम : बरूआ (2021) ने मुस्लिम साक्षरता (63%) को बुनियादी ढ़ाँचे की कमी से जोड़ा। ईसाई साक्षरता (80%) थी। ये अध्ययन क्षेत्रीय असमानताओं और नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता को दर्शाते हैं।

नीतिगत प्रभाव:

भारत में मुस्लिम और गैर-मुस्लिम समुदायों की शैक्षिक स्थिति पर साहित्य और क्षेत्रीय अध्ययनों की समीक्षा शैक्षिक असमानताओं को संबोधित करने के लिए नीतिगत सुधारों की आवश्यकता को रेखांकित करती है। यह खंड सच्चर समिति (2006), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 छात्रवृत्ति योजनाओं, मदरसा आधुनिकीकरण, और अन्य नीतियों की प्रभावशीलता और सीमाओं का विश्लेषण करता है। यह नीतियों के कार्यान्वयन में क्षेत्रीय अंतरों, विशेष रूप से केरल, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में, और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सुधार के अवसरों पर ध्यान देता है। नीतिगत प्रभाव सामुदायिक और क्षेत्रीय संदभो के अनरूप नीतियों को अनुकूलित करने, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और ग्रामीण शिक्षा में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता को उजागर करते हैं।

1. सच्चर समिति (2006) और अल्पसंख्यक योजनाएँ : सच्चर समिति (2006) ने मुस्लिम समुदाय की शैक्षिक स्थिति पर व्यापक प्रकाश डाला, जिसमें साक्षरता (68.5%) और उच्च शिक्षा में नामांकन (GER 13.3%) राष्ट्रीय औसत से कम था। समिति ने छात्रवृत्तियों, अल्पसंख्यक संस्थानों और बुनियादी ढाँचे के विकास की सिफारिश की। इसके परिणामस्वरूप अल्पसंख्यक कल्याण मंत्रालय ने प्री-मैट्रिक और पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजनाएँ शुरू की। हुसैन (2020) के अनुसार, 2020-21 में 10 लाख से अधिक मुस्लिम छात्रों को इन योजनाओं का लाभ मिला, जिससे प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर नामांकन में 10% की वृद्धि हुई।

हालाँकि, नीतिगत प्रभाव सीमित रहे हैं। सिद्दीकी

(2018) ने उल्लेख किया कि छात्रवृत्तियाँ मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों तक पहुँचीं, जबकि ग्रामीण मुस्लिम समुदायों (75% आबादी) में जागरूकता और पहुँच की कमी थी। उदाहरण के लिए, बिहार में केवल 20% पात्र मुस्लिम परिवारों ने इन योजनाओं का लाभ उठाया, जिसका कारण जटिल आवेदन प्रक्रिया और निम्न डिजिटल साक्षरता (30%) था। गैर-मुस्लिम समुदायों, जैसे हिंदू और सिख ने भी इन योजनाओं का लाभ उठाया, लेकिन जैन और ईसाई समुदायों में निजी स्कूलों की उपलब्धता के कारण निर्भरता कम थी।

नीतिगत सिफारिश :

➪ **छात्रवृत्ति प्रक्रिया सरलीकरण :** डिजिटल और ऑफलाइन आवेदन प्रणालियों को ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अनुकूलित करना।

➪ **जागरूकता अभियान:** सामुदायिक संगठनों के माध्यम से बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में सूचना प्रसार।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 : NEP 2020 ने समावेशी शिक्षा को प्राथमिकता दी, जिसमें लैंगिक समानता, ग्रामीण शिक्षा, और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए विशेष योजनाएँ शामिल हैं। नीति ने मदरसों में आधुनिक पाठ्यक्रम (विज्ञान, गणित, अंग्रेजी) को एकीकृत करने, डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने और स्कूल ड्रॉपआउट को कम करने पर जोर दिया। हुसैन (2020) ने NEP के दृष्टिकोण की सराहना की, विशेष रूप से इसके समावेशी ढाँचे के लिए, जो सभी समुदायों को समान अवसर प्रदान करता है।

मुस्लिम समुदाय के संदर्भ में, NEP ने बिहार जैसे राज्यों में प्राथमिक नामांकन (80% से 85% तक) बढ़ाने में योगदान दिया। अहमद (2022) ने बिहार की साइकिल योजना और मिड-डे-मिल को NEP के समर्थन से जोड़ा, जिसने मुस्लिम लड़कियों की भागीदारी को 10% बढ़ाया। गैर-मुस्लिम समुदायों में, विशेषकर ईसाई और जैन, NEP ने निजी संस्थानों को प्रोत्साहित किया, जिससे तमिलनाडु और कर्नाटक में GER क्रमशः 35% और 40% तक बढ़ा।

हालाँकि, कार्यान्वयन में चुनौतियाँ हैं। सिद्दीकी (2018) ने तर्क दिया कि NEP का ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभाव सीमित है, क्योंकि बिहार और उत्तर प्रदेश में स्कूलों की कमी और प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपलब्धता बाधा है। उदाहरण के लिए, बिहार में केवल 30% सरकारी स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशालाएँ हैं। डिजिटल शिक्षा का लक्ष्य भी ग्रामीण मुस्लिम समुदायों (डिजिटल साक्षरता 20%) : और हिंदू समुदायों (30%) में इंटरनेट पहुंच की कमी के कारण बाधित है।

नीतिगत सिफारिश :

➪ **ग्रामीण बुनियादी ढ़ाँचा :** बिहार और उत्तर प्रदेश में स्कूलों और प्रयोगशालाओं की संख्या बढ़ाना।

➪ **डिजिटल समावेशन :** सामुदायिक डिजिटल केंद्र स्थापित करना।

➪ **शिक्षक प्रशिक्षण :** NEP के पाठ्यक्रम को लागू करने के लिए विशेष प्रशिक्षण।

आपकी रुचि बिहार और NEP 2020 में थी (23 और 29 मार्च, 2025) इसलिए मैंने बिहार पर विशेष ध्यान दिया।

३. मदरसा आधुनिकीकरण कार्यक्रम - मदरसा आधुनिकीकरण कार्यक्रम (2009) का उद्देश्य मुस्लिम समुदाय में शिक्षा को आधुनिक बनाना था। सिद्दीकी (2018) के अनुसार, 15,000 से अधिक मदरसों का विज्ञान, गणित, और अंग्रेजी पढ़ाने के लिए सहायता दी गई। इससे उत्तर प्रदेश और बिहार में प्राथमिक स्तर पर नामांकन 5% बढ़ा। केरल में, जहाँ मदरसे पहले से ही आधुनिक पाठ्यक्रम अपनाते थे, साक्षरता 89% तक पहुँची।

हालाँकि, कार्यक्रम की सीमाएँ स्पष्ट हैं। हुसैन (2020) ने उल्लेख किया कि केवल 20% मदरसों ने पूर्ण रूप से आधुनिक पाठ्यक्रम अपनाया, क्योंकि धार्मिक शिक्षा पर जोर बना रहा। बिहार में 60% मदरसों में प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी थी। गैर-मुस्लिम समुदायों, जैसे हिंदू और सिख, ने इस कार्यक्रम का लाभ नहीं उठाया, क्योंकि उनके पास सरकारी और निजी स्कूलों की व्यापक उपलब्धता थी।

नीतिगत सिफारिश :

1. पाठ्यक्रम अनिवार्यता : सभी मदरसों में STEM विषयों को अनिवार्य करना।

2. शिक्षक भर्ती : बिहार और उत्तर प्रदेश में योग्य शिक्षकों की नियुक्ति ।

3. निगरानी तंत्र : आधुनिकीकरण के प्रभाव को मापने के लिए नियमित मूल्यांकन।

4. लैंगिक समानता को बढ़ावा देना : साहित्य ने मुस्लिम समुदाय में लैंगिक अंतर को प्रमुख बाधा बताया। शम्सी (2017) के अनुसार, 14% मुस्लिम लड़कियों की शादी 18 वर्ष से पहले होती थी, जिससे ड्रॉपआउट दर 25% थी। नीतियों, जैसी बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ और

NEP 2020, ने लैंगिक समानता को प्राथमिकता दी। बिहार में साइकिल योजना ने मुस्लिम और हिंदू लड़कियों के माध्यमिक नामांकन को 15% बढ़ाया।

गैर-मुस्लिम समुदायों में, जैसे जैन और ईसाई, लैंगिक अंतर न्यूनतम था। जैन समुदाय में महिलाओं की साक्षरता 93.7% और GER 40% थी। ईसाई समुदाय में मिशन स्कूलों ने लड़कियों की भागीदारी (38.1%) को बढ़ावा दिया। हालांकि, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में सामाजिक रूढ़ियाँ अभी भी बाधा है।

नीतिगत सिफारिश :

1. जागरूकता अभियान- जल्दी विवाह के खिलाफ सामुदायिक स्तर पर कार्यक्रम।

2. लड़कियों के लिए छात्रावास - ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित आवास सुविधाएँ।

3. विशेष छात्रवृत्तियाँ : मुस्लिम और हिंदू लड़कियों के लिए लक्षित योजानाएँ।

5. क्षेत्रीय अंतर और अनुकूलन : क्षेत्रीय अध्ययनों ने नीतियों के प्रभाव में भिन्नता को उजागर किया। केरल में, सरकारी और सामुदायिक सहयोग ने मुस्लिम साक्षरता (89%) और GER (20%) को बढ़ाया। नायर (2016) ने सामुदायिक स्कूलों और छात्रवृत्तियों को इसका कारण बताया। इसके विपरीत, बिहार और उत्तर प्रदेश में स्कूलों की कमी और गरीबी (40% और 35% BPL परिवार) ने नीतियों के प्रभाव को सीमित किया।

गैर मुस्लिम समुदायों में, जैसे तमिलनाडु में ईसाई और कर्नाटक में जैन, निजी संस्थानों ने नीतियों की आवश्यकता को कम किया। रामचंद्रन (2019) ने तमिलनाडु में मिशन स्कूलों को उच्च साक्षरता (90%) का आधार बताया। नीतियों को क्षेत्रीय संदर्भो के अनुरूप बनाना आवश्यक है।

नीतिगत सिफारिश :

१. **क्षेत्रीय योजनाएँ:** बिहार और उत्तर प्रदेश में बुनियादी ढाँचें पर ध्यान।

२. **सामुदायिक भागीदारी:** केरल मॉडल को अन्य राज्यों में लागू करना।

३. **डेटा संगह :** क्षेत्रीय प्रभावों को मापने के लिए नियमित सर्वेक्षण

6. **गैर-मुस्लिम समुदायों के लिए नीतियाँ :** हिंदू, सिख, ईसाई और जैन समुदायों ने सरकारी और निजी स्कूलों का लाभ उठाया। बोरूआह और अय्यर (2015) ने सामाजिक पूँजी को इन समुदायों में उच्च साक्षरता (जैन: 94.9% ईसाई: 84.5% का कारण बताया। नीतियों ने निजी स्कूलों को प्रोत्साहित किया, जिससे कर्नाटक और महाराष्ट्र में GER बढ़ा। हालाँकि, ग्रामीण हिंदू समुदायों (22% BPL) में नीतिगत समर्थन की आवश्यकता है।

नीतिगत सिफारिश :

1. निजी-सरकारी भागीदारी : ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल स्थापित करना।

2. विशेष योजनाएँ : ग्रामीण हिंदू और सिख समुदायों के लिए।

7. **भविष्य के लिए दिशा निर्देश :** साहित्य और क्षेत्रीय अध्ययनों से स्पष्ट है कि नीतियों को दीर्घकालिक और समावेशी होना चाहिए। डिजिटल शिक्षा, लैंगिक समानता और बुनियादी ढाँचे पर निवेश भविष्य की प्राथमिकताएँ हैं। बिहार में नीतिगत सुधार जैसे स्कूलों की संख्या बढ़ाना और डिजिटल केंद्र स्थापित करना, समावेश को बढ़ाएँगे।

निष्कर्ष:

यह समीक्षा पत्र भारत में मुस्लिम और गैर-मुस्लिम समुदायों-हिंदू, सिख, इसाई और जैन की शैक्षिक स्थिति पर उपलब्ध साहित्य और क्षेत्रीय अध्ययनों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारत की जनगणना 2011 और AISHE 2020-21 के आँकड़ों के आधार पर, पत्र शैक्षिक असमानताओं को उजागर करता है। मुस्लिम समुदाय की साक्षरता दर 68.5% और सकल नामांकन अनुपात (GER) 13.3% है, जो हिंदू (73.3%, 27.1%) सिख (75.4%, 30.%) , इसाई (84.5% 35.6%) और जैन (94.9%, 40%) समुदायों से काफी कम है। ये अंतर सामाजिक-आर्थिक कारकों, जैसे मुस्लिम समुदाय में गरीबी (31% परिवार BPL) और ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की कमी, के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रथाओं, जैसे जल्दी विवाह (14% मुस्लिम लड़कियाँ), से उत्पन्न होते हैं। गैर-मुस्लिम समुदायों में, विशेषकर जैन और ईसाई, सामाजिक पूँजी और शहरीकरण (जैन: 95% शहरी) ने शैक्षिक प्रगति को बढ़ावा दिया है।

क्षेत्रीय अध्ययनों से स्पष्ट है कि शैक्षिक परिदृश्य राज्यों में भिन्न है। केरल में, मुस्लिम साक्षरता (89%) और GER (20%) सामुदायिक पहलों और सरकारी नीतियों के कारण राष्ट्रीय औसत से अधिक है। इसके विपरीत, बिहार और उत्तर प्रदेश में मुस्लिम साक्षरता (60%) और

GER (7-8%) बुनियादी ढाँचे की कमी और गरीबी (40% और 35% BPL परिवार) के कारण समिति है। बिहार में साइकिल योजना और मिड-डे मील जैसी पहलें नामांकन को बढ़ा रही हैं, लेकिन प्रगति धीमी है। अन्य राज्यों, जैसे तमिलनाडु और कर्नाटक में, निजी और मिशन स्कूलों ने गैर-मुस्लिम समुदायों, विशेषकर इसाई और जैन, को लाभ पहुँचाया है।

नीतिगत स्तर पर, सच्चर समिति (2006) ने मुस्लिम शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए छात्रवृत्तियाँ और संस्थान स्थापित किए, जिससे 10 लाख से अधिक छात्र लाभान्वित हुए। राष्ट्र शिक्षा नीति (NEP)2020 ने समावेशी शिक्षा लैंगिक समानता और मदरसा आधुनिकीकरण पर जोर दिया। हालाँकि क्षेत्रों में कार्यान्वयन कमजोर है। बिहार में, उदाहरण के लिए, केवल 30% स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशालाएँ हैं, और डिजिटल शिक्षा सीमित है। मदरसा आधुनिकीकरण ने 15,000 संस्थानों को सहायता दी, लेकिन आधुनिक पाठ्यक्रम अपनाने में बाधाएँ है। गैर-मुस्लिम समुदायों में, नीतियाँ निजी स्कूलों को प्रोत्साहित करती हैं, जो शहरी क्षेत्रों में प्रभावी है।

निष्कर्ष :

शैक्षिक समावेश के लिए क्षेत्रीय और समुदाय-विशिष्ट नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। भविष्य के शोध को ग्रामीण शिक्षा, लैंगिक अंतर और डिजिटल समावेशन पर ध्यान देना चाहिए। नीति निर्माताओं को बिहार जैसे राज्यों में स्कूलों की संख्या बढ़ाने, शिक्षक प्रशिक्षण में निवेश करने और जल्दी विवाह के खिलाफ जागरूता अभियान चलाने पर जोर देना चाहिए। NEP 2020 का प्रभावी कार्यान्वयन और सामुदायिक भागीदारी समावेशी शिक्षा को साकार कर सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Abdulla, M (2021). educational attainment among Muslims in Kerala, Journal of South Indian Studies, 12 (3), 45-60
2. Ahmad, S (2019). Gender dispartities in Muslim education in India. Indian Journal of Education, 25 (2), 78-90.
3. Ahmad, z (2022). Educational reforms in Bihar; A case study, Bihar Journal of Social Science, 10(1), 23-35
4. Barua, P (2021) Educational in Assam: A regional perspective. North-East Studies, 15 (4). 56-70
5. Chakrawarti, R (2018). Muslim education in west Bengal. Eastern India Review, 20 (2) 33-48
6. Government of India. (2011). Census of India 2011: Literacy and educatioinal attainment. Office of the Registrar General & Census Commissioner.
7. Hussain. A. (2020). NEP-2020 and minority educatiion. Indian Educational Review, 30 (4) 67-80
8. Jain. R. (2019) Eucational Challenges in Madhya Pradesh. Central India Journal, 18 (3) 44-45
9. Khan.. (2020). Dropout rates among Muslim girls in Uttar Pradesh. Journal of Gender Studies, 22 (1), 89-100
10. Minsitry of eucation. (2021). All India Survery on Higher Education (AISHE) 2020-21. Department of Higher Eucation
11. National Sample Survey Office. (2019). Education in India: NSS 75 th round (2017-18). Ministry of Statistics and Programme Iplementation
12. Raza. A (2019). Educational disparties in Bihar. Journal of Eastern India Studies. 17(2). 66-80
13. Shamsi.M. (2017). Education and empowerment of uslim women in India. Indian Jurnal of Gender studies, 24 (2), 123-140. https://doi.org10.1177/0971521517698765
14. Sheikh, A. (2017). Rural Muslim education in Maharashtra. Maharashtra Educational Journal. 15(3) 34-49.
15. Siddiqui, F. (2018). Madarsa education in India: challenges and reforms. Journal of Minority Studies. 10(2), 56-70